कूर्मांचल मित्र – जयदत्त तिवारी (1925)

⇒ 'बाजार बंधु' हस्त लिखित अखबार 1913 में अल्मोड़ा के खजांची मो० हल्ला ने शुरू किया।

⇒ - शक्ति अखबार (1918) → बदरीदत्त पांडे → उद्यान पत्रिका → हीरा बल्लभ जोशी (पियो राग।)
- ज्योति (1919) – भवानीदत्त जोशी → उत्तराखंड ज्योति → हीरा बल्लभ जोशी (पियो राग।)

⇒ 1905 से पहले टिहरी गढ़वाल के नरेशों की राजाज्ञाएं लाहौर और शिमला से छपने वाले 'सिविल एण्ड मिलिट्री' में ही छपती थी।

⇒ 1905 से राजशाही ने 'एनुअल एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट' के नाम से अपना गजट छापना शुरू किया। इतिहासकार डा० मतुल सकलानी के अनुसार यह गजट 1945 तक छपता रहा

⇒ गढ़वाल मण्डल के मसूरी से उत्तराखंड का पहला अंग्रेजी अखबार 'द हिल्स' अवश्य निकला मगर पहले-पहल हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत कराने का श्रेय महाराजा कीर्तिशाह को ही जाता है। हालांकि जिस नींव की तैयारी कीर्तिशाह ने की थी उस पर मजबूत बुनियाद डालने का काम प० गिरजा दत्त नैथानी ने किया था

⇒ डी० भक्त दर्शन (गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां द्वितीय संस्करण) के अनुसार सन् 1901 में यूरोप यात्रा से लौटने के बाद महाराजा कीर्तिशाह ने टिहरी नगर में एक मुद्रणालय स्थापित किया था और समूचे गढ़वाल क्षेत्र का सर्वप्रथम पाक्षिक समाचार पत्र 'रियासत टिहरी गढ़वाल' प्रकाशित कराना प्रारम्भ किया था।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

पुरुषार्थ (पत्र) — गिरजादत्त नैथानी

⇒ डा० योगेश धस्माना ने अपनी पुस्तक "उत्तराखण्ड में जन-जागरण और आन्दोलन का इतिहास" पर रियासत टिहरी गढ़वाल 'अखबार' का उल्लेख किया है।

⇒ महाराजा कीर्ति शाह ने अपने वजीर हरिकृष्ण रतूड़ी को प्रोत्साहित कर उनसे गढ़वाल का इतिहास भी लिखवाया था, जो आज भी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज माना जाता है।

⇒ धनीराम शर्मा ने 1909 में पहली बार दुगड्डा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की थी। वह ब्रिटिश गढ़वाल का पहला छापाखाना था।

⇒ रायबहादुर तारा दत्त गैरोला के नेतृत्व में विश्वम्बर दत्त चन्दोला, गिरजा दत्त नैथानी, चन्द्र मोहन रतूड़ी और सत्यशरण रतूड़ी आदि युवाओं ने गढ़वाल के जाने माने सम्पन्न लोगों की प्रेरणा और सदाशयता से 1901 में 'गढ़वाल यूनियन' की स्थापना की जिसका हिन्दी नाम 'गढ़वाल हितकारिणी सभा' रखा गया

⇒ सन् 1902 में लैंसडौन, दुगड्डा से गिरजा दत्त नैथानी के सम्पादकत्व में 'गढ़वाल समाचार' शुरू हो गया, यह अखबार सबसे पहले आर्य भास्कर प्रेस मुरादाबाद से छपा। वह 1912 से स्टॉवेन प्रेस दुगड्डा से छपने लगा था। इससे पहले गढ़वाल यूनियन ने एक पत्र निकालने की योजना बनाई तो पहले से ही मौजूद 'गढ़वाल समाचार' का स्मरण आना स्वाभाविक था, क्योंकि गढ़वाल की हिन्दी पत्रकारिता की नींव का पत्थर ही वही अखबार था। इसके लिए गिरजा दत्त नैथानी को विश्वास में लिया गया और उस पत्र को 1905 में 'गढ़वाली' के नाम से शुरू किया गया देहरादून से प्रकाशित 'गढ़वाली' (1905-1952)

इसका पहला संपादक होने का श्रेय - गिरजा दत्त नैथानी को जाता है बाद में यह पत्र उत्तराखण्ड की पत्रकारिता के इतिहास का एक आधार स्तम्भ बना।

UTTARAKHAND EXAM NOTES